

**स्वयंप्रकाश वि.** (तत्.) 1. जो स्वतः प्रकाशित हो रहा हो पुं. 1. ज्योतिष 2. परब्रह्म।

**स्वयंप्रभ वि.** (तत्.) स्वयं के प्रकाश से युक्त पुं. जैन धर्म के अनुसार 24 अर्हत्तों में से चौथे अर्हत् का नाम।

**स्वयंप्रभा स्त्री.** (तत्.) 1. मयदानव के द्वारा हरण करके लाई गई इंद्र की एक अप्सरा जिसके गर्भ से मंदोदरी पैदा हुई थी 2. स्वयं प्रकाशित होने वाली कोई ज्योति।

**स्वयं प्रमाण वि.** (तत्.) जो अपने आप में प्रमाण हो तथा जिसे प्रमाणित करने के लिए अन्य किसी प्रमाण की आवश्यकता ही न हो जैसे- 'वेद' स्वयं प्रमाण हैं।

**स्वयंफल वि.** (तत्.) जो खुद का ही अपना फल हो अर्थात् जो किसी दूसरे कारण से उत्पन्न न हुआ हो।

**स्वयंभर वि.** (तत्.) अपने के किये हुए किसी रिक्त स्थान को स्वयं भरने वाला।

**स्वयंभु पुं.** (तत्.) 1. ब्रह्मा 2. अज 3. वेद 4. जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक।

**स्वयंभुक्ति पुं.** (तत्.) धर्मशास्त्र के अनुसार पाँच साक्षियों में से एक जो बिना बुलाए स्वयं आकर न्यायालय में गवाही देता हो।

**स्वयंभू वि.** (तत्.) 1. अपने आप से उत्पन्न होने वाला 2. बिना किसी शिक्षा, योग्यता, अधिकार प्राप्त किए अपने आप से बन जाने वाला जैसे- स्वयंभू नेता या स्वयंभू शासक।

**स्वयंभूत वि.** (तत्.) 1. जिसने अपने आप को स्वयं बनाया हो 2. जो अपनी इच्छा शक्ति से स्वयं अवतीर्ण हुआ हो या जगत् में अस्तित्व में आया हो।

**स्वयंभूरमण पुं.** (तत्.) जैनमतानुसार अंतिम महाद्वीप और उसके समुद्र का नाम।

**स्वयंवर पुं.** (तत्.) 1. प्राचीनकाल में संपन्न किया जाने वाला वह विशेष उत्सव जिसमें कन्या विवाहार्थियों में से किसी एक को स्वयं वरण

करती थी 2. कन्या द्वारा स्वयं पति चुनने या वरण करने की एक रीति या प्रथा।

**स्वयंवरण पुं.** (तत्.) कन्या का अपनी इच्छानुसार मनोनुकूल अपने लिए वर का वरण या चयन करना।

**स्वयंवरा स्त्री.** (तत्.) ऐसी कन्या जिसने अपने लिए पति का वरण स्वयं किया हो।

**स्वयंवह वि.** (तत्.) 1. स्वयं को वहन/धारण करने वाला 2. स्वयं चलने वाला कोई यंत्र आदि 3. ऐसा वाद्य यंत्र जो चाबी देने पर स्वयं बजने लगता हो।

**स्वयंवादि दोष पुं.** (तत्.) न्यायालय में अपने बयान को बार-बार बदलने का दोष या अपनी झूठी बात को बार-बार दुहराने का अपराध।

**स्वयंवादी पुं.** (तत्.) न्यायालय में मुकदमे के दौरान जिरह के समय किसी झूठी बात को बार-बार दोहराने वाला व्यक्ति।

**स्वयंशिक्षक पुं.** (तत्.) किसी भाषा या कला या गणितादि विषय को स्वयं सीखने के लिए लिखी गई वह पुस्तक जो शिक्षक की तरह सिखाने का काम करती हो अर्थात् सीखने वाले की कोई समस्या न रह जाए।

**स्वयंसिद्ध वि.** (तत्.) कोई वह तथ्य या बात जो बिना किसी प्रमाण या तर्क के स्वयं सिद्ध प्रमाणित हो, सर्वमान्य।

**स्वयंसिद्धि स्त्री.** (तत्.) ऐसा सर्वमान्य स्वीकृत सिद्धांत या तथ्य जिसे किसी अन्य प्रमाण से सिद्ध करने की आवश्यकता न हो।

**स्वयंसेवक पुं.** (तत्.) 1. वह सेवक जो बिना किसी प्रकार का पारिश्रमिक/वेतन लिए स्वेच्छा से सेवा कार्य करता हो 2. किसी ऐसी स्वयंसेवी संस्था का सदस्य जिसका उद्देश्य केवल सेवा करना हो।

**स्वयंसेवा स्त्री.** (तत्.) 1. अपनी आंतरिक इच्छा और निश्छल हृदय से दूसरों की की जाने वाली सेवा 2. अपना कार्य स्वयं करने की प्रवृत्ति।